एकलव्य एवं रूपान्तर का प्रकाशन

मुसवा ला मिलीस कलम

एकठन पुतरी कथा

वी. सुतेयेव

मुसवा ला मिलीस कलम

मूल रचना

वी. सुतेयेव

अनुवाद

छन्नुराम मार्कन्डे

एकलव्य एवं रूपान्तर

का प्रकाशन

मुसवा ला कलम मिलीस

एकठन पुतरी कथा

मूल रचना : वी. सुतेयेव

अनुवाद : छन्नुराम मार्कन्डे

अनुवाद सहयोग : चिन्ताराम साहू, इलीना सेन

स्टोरीज़ एण्ड पिक्चर्स की एक पुतरी कथा।
प्रगति प्रकाशन, मास्को के सौजन्य से अंग्रेज़ी
वर से अनुदित एवं प्रकाशित।

ये किताब मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत शासन अउ सर रतन टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से प्रकाशित।

ये किताब हिन्दी, अंग्रेजी, गुजराती, उड़िया, तेलुगु, बांग्ला, बुन्देली, मालवी और मराठी में भी उपलब्ध है।
कुल प्रतियाँ 30000.

दिसम्बर, 2000 /1000 प्रतियाँ
मूल्य रु. 10.00

प्रकाशक

एकलव्य, ई-1/25, अरेरा कालोनी,
भोपाल - 462 016, म. प्र.

एवं

रूपान्तर, ए -26, सूर्या अपार्टमेंट्स
कटोरा तालाब, रायपुर-492 001

भंडारी ऑफसेट प्रिंटर्स, भोपाल द्वारा मुद्रित।

THE MOUSE AND THE PENCIL
A picture story

Text and illustrations - **V. SUTEYEV**
Translation - **Chhannuram Markande**
Translation Assistance - **Chintaram Sahu, Ilina Sen**

From STORIES AND PICTURES
Progressive Publishers, MOSCOW

Published with the financial assistance from Ministry of Human Resource Development, Government of India and Sir Ratan Tata Trust.

December, 2000 / 1000 copies
Price : Rs.10.00
This book is also published in these languages - Hindi Gujarati, Bangla, Telugu, Oriya, Bundeli, Malvi, Marathi and English. Total copies 30000.

Published by:
EKLAVYA
E-1/25, Arera Colony
Bhopal - 462 016 (M.P.)
AND
RUPANTAR
A - 26, Surya Apartments, Katora Talab,
RAIPUR-492 001

Printed at Bhandari Offset Printers, Bhopal.

मुसवा ला मिलीस कलम

एक घांव एक मूसवा ह खाय बर, कुछू-काँहीं एती ओती-
खोजत रिहीस। तभे ओला एकठन कलम मिलीस।

मूसवा ह कलम धर के अपन बीला म खुसरगे। ता कलम हा कलप के मूसवा ले किहिस ''मोला छोड़ दे, मोला जावन दे, मै तोर कुछू काम के नो हँव, भइगे एकठन लकड़ी के कुटका तो आंव। मोला खाबे त मिठावँव घलोक नहीं।''

''मैं हा तोला कतर हूँ'' कहिके मूसवा हा कलम ला किहिस। ''मोला अपन दाँत ला धार अउ छोटे रखे बर हरदम कुछू काँहीं कतरेच बर पड़थे।'' अउ मुसवा हा कलम ला कतरे बर धर लीस।

''ए दाई ओ! मोला पिरावत हे।''
कहिके कलम ह मूसवा ला किहिस,
''तोर बर मोला एकठन फोटू
बना लेवन दे, फेर तोर
जइसन जी मा आए
कर लेबे।

''ले बन जाही,'' सोचके मूसवा ह कलम ला किहिस, '' ले तेंहा फोटू बना ले। तँहाँ ले मैं हा तोला कतर-कतर के तोर कुटी-कुटी कर दुहूँ।''

कलम थोरकन सुस्ताइस।
अउ एकठन बड़ेक जान
गोलवा बनाइस। ''ये हा
सोंहारी ए का?''
कहिके मुसवा हा
कलम ले
पूछिस।''

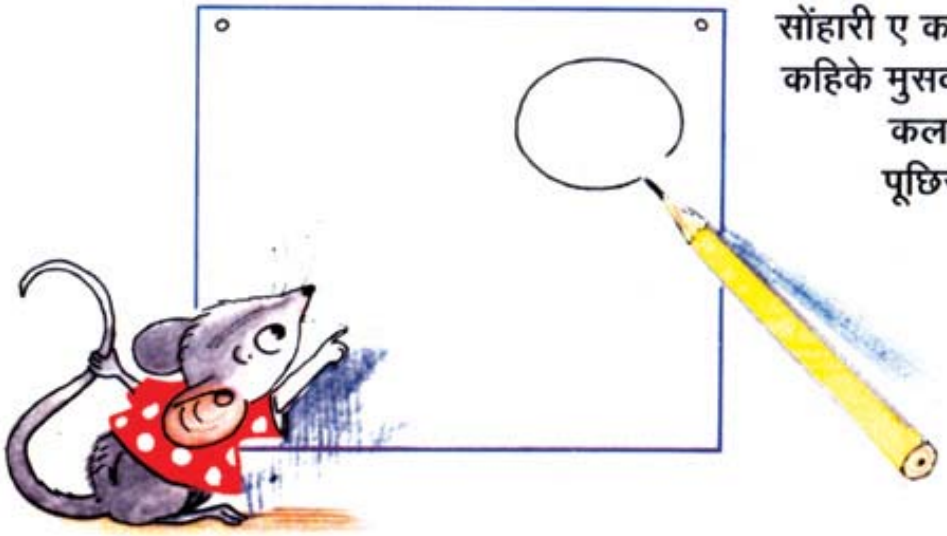

ता कलम हा मूसवा ला किहिस, ''ठीक हे हमन ए ला सोंहारी कहिबो।'' फेर कलम हा बड़े गोलवा के भीतरी मा तीनठन नान-नान गोला अउ बना दीस।

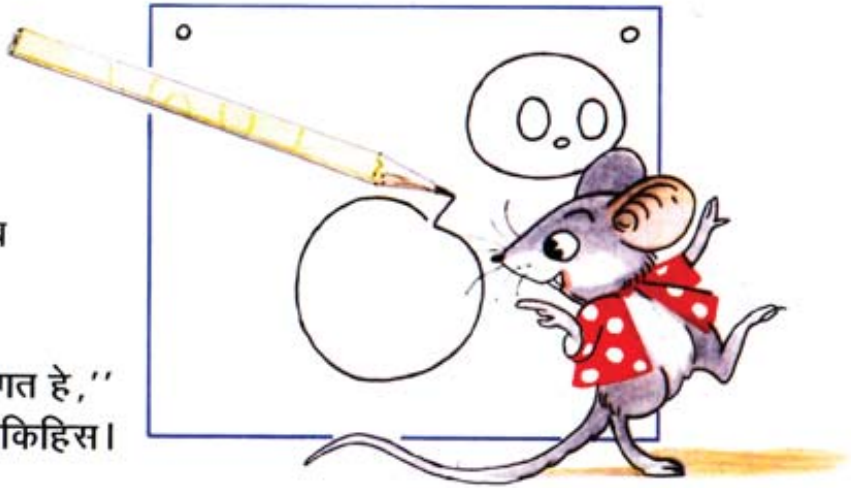

''हव! अब
तो ए हा
सोंहाँरीच
असन लागत हे,''
मूसवा हा किहिस।

''ओमा तो एकठन भोलका दिखत हे।''

''चलव हम ओला सोंहारी म भोलका हे कहिबो।'' कलम ह ओकर बात मान लिस, अउ बड़का गोलवा के तरी मा एकठन अउ बड़का गोलवा बनईस।

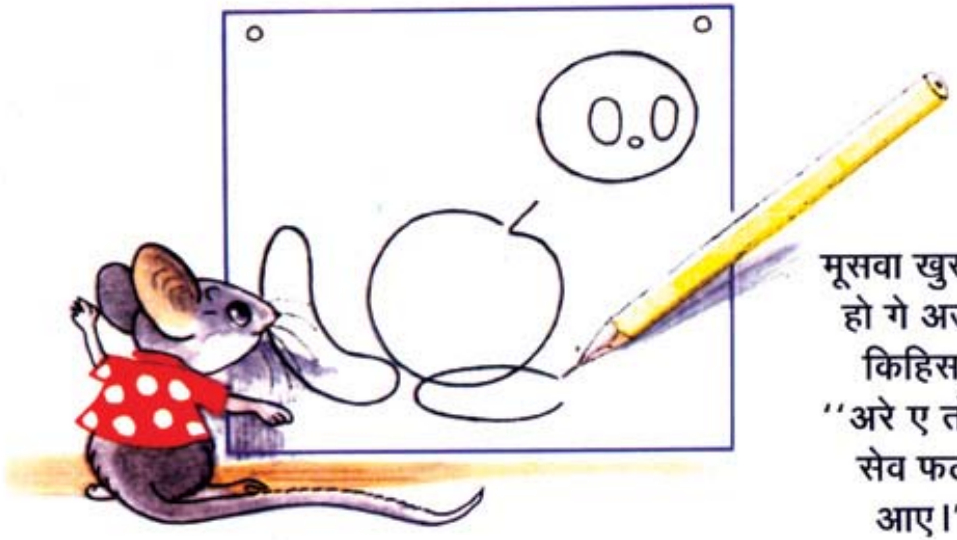

मूसवा खुस हो गे अउ किहिस, ''अरे ए तो सेव फल आए।''

मूसवा के गोठ ला सुन के कलम हा किहिस, ''हव ए ला सेव फल कहि ले।'' फेर ओ हा दूसर बड़का गोलवा के तीर मा एकठन अलकरहा पुतरी बनाएल लगीस।

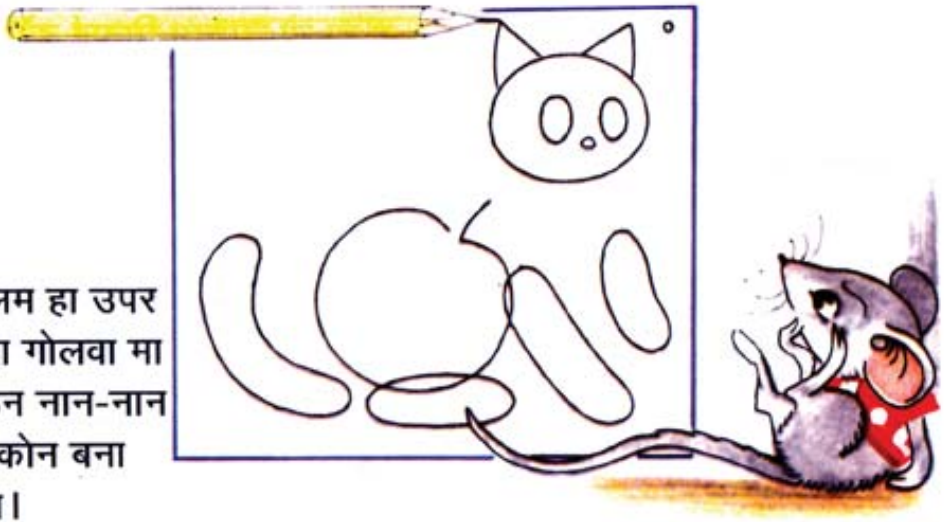

कलम हा उपर वाला गोलवा मा दू ठन नान-नान तिरकोन बना दीस।

'अरे! अरे!' कहिके मूसवा चिल्लईस, ''अब तें हा ओला बिलई जईसन बनाय बर धर ले हस। अइसन झन बना।''

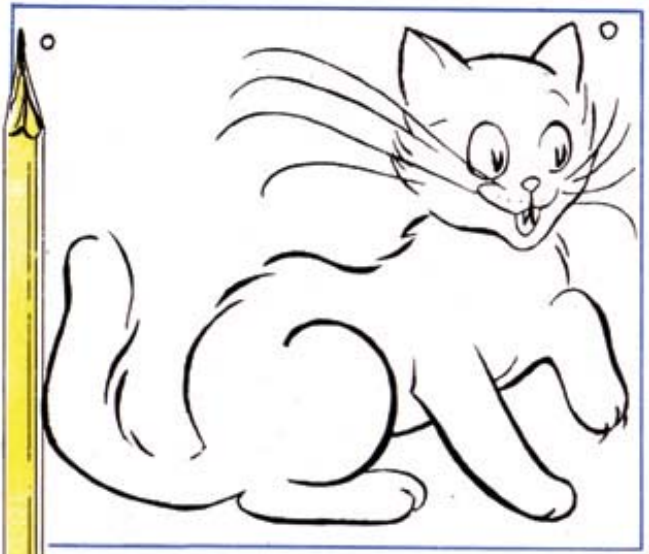

कलम हा बनातेच रिहिस, अउ ओ हा उपर के गोला म लाम-लाम मेंछा अउ एक ठन मुंहू बनादीस।

मूसवा हा डर्राके चिल्लईस, ''ए ददा रे, ये ह तो असली बिलई कस लागत हे मोला बचाओ, बचाओ।'' कहिके मूसवा ह अपन बिला मा खुसरगे।

तहुँमन का एकठन बिलई के फोटु ल बना सकत हव,
जेला देखके मूसवा ह डर्रा जाय?

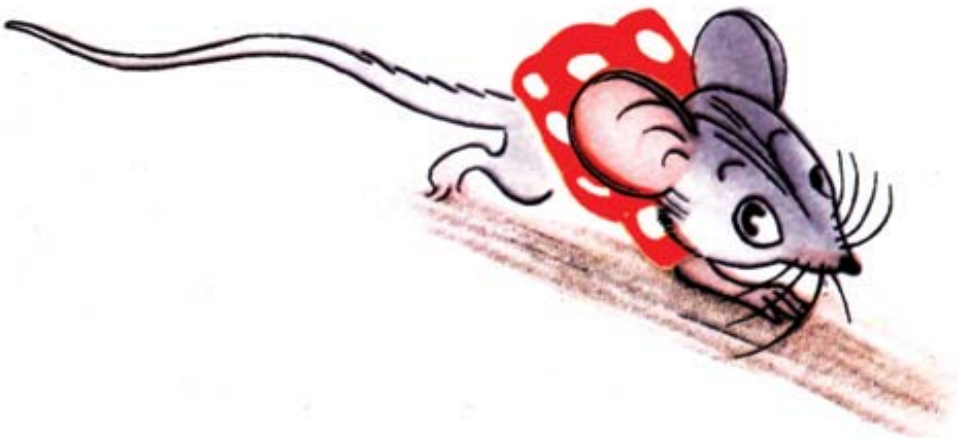

मूल्य 10 रुपए